अव्यक्तादीनि=जन्म से पूर्व अप्रकट; **भूतानि**=सम्पूर्ण प्राणी; **व्यक्त**=प्रकट होते हैं; **मध्यानि**=मध्य में; **भारत**=हे भरतवंशी अर्जुन; **अव्यक्त**=अप्रकट; **निधनानि**=निधन होने पर; **एव**=इस प्रकार; **तत्र**=इस विषय में; **का**=क्या; **परिवेदना**=शोक है।

अनुवाद

सभी प्राणी जन्म से पूर्व अव्यक्त रहते हैं, और निधन होने पर फिर से अव्यक्त हो जाते हैं। केवल मध्य में ही व्यक्त होते हैं; फिर इसमें शोक का क्या कारण है?।।२८।।

तात्पर्य

आत्मा को मानने और न मानने वाले, इन दोनों ही प्रकार के दार्शनिकों के मत के अनुसार शोक का कोई कारण नहीं है। जिनका आत्मा में विश्वास नहीं है, उन्हें वैदिक ज्ञान के अनुगामी अनीश्वरवादी कहते हैं। यदि तर्क के लिये नास्तिक-मत को स्वीकार कर भी लिया जाय, तो भी शोक करना व्यर्थ सिद्ध होता है। आत्मा के पृथक स्वरूप के अतिरिक्त सम्पूर्ण प्राकृत-तत्त्व सृष्टि से पूर्व अव्यक्त रहते हैं। इसी विरल अव्यक्त अवस्था से सृष्टि प्रकट होती है; क्रमशः आकाश से वायु उत्पन्न होती है, वायु से अग्नि का प्रादुर्भाव होता है, अग्नि से जल तथा जल से पृथ्वी की अभिव्यक्ति होती है। पृथ्वी से भी नाना पदार्थ होते हैं। एक गगनचुम्बी प्रासाद पृथ्वी से ही प्रकट होता है; खण्डित होने पर पुनः अव्यक्त हो जाता है तथा अन्त में परमाणु रूप से शेष रह जाता है। यह सिद्धान्त है कि ऊर्जा का कभी विनाश नहीं होता, यथासमय पदार्थ ही व्यक्त-अव्यक्त हुआ करते हैं। ऐसे में व्यक्त अथवा अव्यक्त—किसी भी अवस्था के लिये शोक का क्या युक्तिसंगत हेतु हो सकता है? येन-केन-प्रकारेण अव्यक्त अवस्था में भी सृष्टि-तत्त्व का पूर्ण विनाश नहीं होता। आदि-अन्त में सब तत्त्व अव्यक्त रहते हैं, केवल मध्य में अभिव्यक्त होते हैं। वस्तुतः इन दोनों अवस्थाओं में कोई अन्तर नहीं है।

यदि हम गीता में कहे गये इस वैदिक सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं कि देह यथासमय नाशवान हैं (**अन्वन्त इमे देहाः**), जबकि आत्मा नित्य है (**नित्यस्योक्तः शारीरिणः**) तो यह भी नित्य स्मरण रहे कि देह परिधानमात्र है। अतः वस्त्र-परिवर्तन के लिये शोक क्यों किया जाय? सनातन आत्मा की दृष्टि से तो प्राकृत देह का कोई यथार्थ अस्तित्व ही नहीं है; वह स्वप्न जैसा है। स्वप्न-काल में हम आकाश में उड़ने अथवा नृप बनकर रथ में बैठे होने की कल्पना कर सकते हैं, परन्तु जागने पर जान सकते हैं कि हम न तो वास्तव में उड्डयन कर रहे हैं और न ही रथारूढ़ हैं। वैदिक ज्ञान प्राकृत देह की अनित्यता पर बल देकर हमें स्वरूप-साक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है। अतएव चाहे आत्मा के अस्तित्व को माने या न माने, दोनों ही पक्षों में देहनाश के लिये शोक करने का कोई कारण नहीं है।